न्यूज़ टुडे

खेलो इंडिया स्कीम (KIS) के तहत ग्रामीण और स्वदेशी/आदिवासी खेलों को बढ़ावा

- **खेलो इंडिया योजना** में "ग्रामीण और स्वदेशी/आदिवासी खेलों को बढ़ावा" देने वाले घटक को शामिल किया गया है। यह घटक विशेष रूप से देश में **ग्रामीण और स्वदेशी/आदिवासी खेलों के विकास और प्रचार के लिए समर्पित** है।
- खेलो इंडिया योजना का उद्देश्य देश में खेल संस्कृति को बढ़ावा देना और खलों में बेहतर प्रदर्शन हासिल करना है। इससे देश की आबादी को खेल से संबंधित अन्य लाभों के माध्यम से पॉवर ऑफ़ स्पोर्ट्स के सकारात्मक उपयोग में मदद मिलेगी।
  - यह **युवा कार्यक्रम और खेल मंत्रालय** के तहत केंद्रीय क्षेत्रक की एक फ्लैगशिप योजना है।
- इसके तहत निम्नलिखित प्रमुख **स्वदेशी/पारंपरिक खेलों की पहचान** की गई है:

मलखंब, मध्य प्रदेश	○ यह योग, जिम्नास्टिक और मार्शल आर्ट का मिश्रण है। ○ मलखंब के कई प्रकार हैं। इनमें शामिल हैं– लम्बवत लकड़ी के पोल पर मलखंब, रस्सी पर मलखंब, हैंगिंग मलखंब, निराधार (बिना किसी सहारे के) मलखंब, बेंत पर मलखंब, तैरते प्लेटफॉर्म पर मलखंब, हथियारों के साथ मलखंब आदि।
कलारीपयट्टु, केरल	○ यह **मार्शल आर्ट** का एक रूप है। ○ इसमें **अलग–अलग तकनीकें** शामिल हैं। इसमें मेइपयट्टू (शरीर का व्यायाम), वादिपयट्टू (लाठी से लड़ना), वालपयट्टू (तलवार से लड़ना) आदि शामिल हैं।
गतका, पंजाब	○ यह एक प्रकार का पारंपरिक मार्शल आर्ट है, जो ऐतिहासिक रूप से **सिख गुरुओं से जुड़ा** हुआ है। ○ इसमें दो या दो से अधिक लोगों के बीच **लकड़ी की बेंत** से लड़ाई का प्रदर्शन किया जाता है। इसमें **तलवारों के रूप में लकड़ी की बेंत** (जिसे **सोटी** कहा जाता है) का उपयोग किया जाता है।
थांग टा, मणिपुर	○ इस पारंपरिक मार्शल आर्ट को **ह्यूएन लालोंग** (खुद को बचाने का तरीका) भी कहा जाता है।
योगासन	○ योग की भाषा में यह **बैठने की एक मुद्रा** है। इसका उपयोग आमतौर पर ध्यान लगाने के लिए किया जाता है। इसमें पालथी मार कर बैठा जाता है। ○ योगासन के कुछ **उदाहरण हैं: पद्मासन** (कमल मुद्रा), **सिद्धासन** (पूर्ण या सिद्ध मुद्रा), **वज्रासन** (वज्र मुद्रा) आदि।
सिलंबम, तमिलनाडु	○ यह शस्त्र आधारित **भारतीय मार्शल आर्ट** है। इसका अभ्यास पारंपरिक रूप से **श्रीलंका और मलेशिया** के तमिल समुदाय द्वारा भी किया जाता है।

ओलिव रिडले कछुए 'मास नेस्टिंग' के लिए ओडिशा तट पर पहुँचने लगे हैं

- वर्ष 2022 का **अरिबाडा,** गहिरमाथा तट पर दर्ज की गई अब तक की सबसे देरी से घटित होने वाली **मास नेस्टिंग** परिघटना है। अरिबाडा (arribad) का आशय समुद्री कछुओं की मास नेस्टिंग (यानी बड़े स्तर पर अंडे देने) से है।
  - ओडिशा का गहिरमाथा तट, **ओलिव रिडले कछुओं का दुनिया में सबसे बड़ा ब्रीडिंग स्थल** है। इसके बाद **ऋषिकुल्या** का स्थान आता है।
  - ओलिव रिडले कछुए सामान्यतः **रात के समय बालू वाले समुद्र तट पर गड्ढा खोदकर उसमें 40–50 अंडे देते हैं।** अंडे देने के बाद कछुए उसे पुनः बालू से ढक देते हैं। इसके बाद सूर्योदय से पहले कछुए समुद्र में लौट जाते हैं। इन अण्डों से **40–60 दिनों के बाद बच्चे निकलने लगते हैं।**

Nesting Sites Of Olive Ridely Turtles

- **ओलिव रिडले के बारे में:**
  - इनका यह नाम इनके **ओलिव ग्रीन (हरे जैतून) रंग वाले कवच (shell)** के कारण पड़ा है। इनके कवच का आकार दिल के जैसा होता है।
  - ये मुख्य रूप से **प्रशांत, हिंद और अटलांटिक महासागरों के उष्ण कटिबंधीय क्षेत्रों में** पाए जाते हैं।
  - **मुख्य खतरे:**
    - मछली पकड़ने वाले **बड़े–बड़े जालों में दुर्घटनावश फंसने** से इनकी मृत्यु हो जाती है;
    - मांस, कवच और चमड़े के लिए इनका **बड़े पैमाने पर अवैध शिकार** किया जाता है;
    - ये **समुद्री सतह के बढ़ते तापमान से नकारात्मक रूप से प्रभावित** होते हैं; आदि।
  - **ये कछुए IUCN की लाल सूची में वल्नरेबल (सुभेद्य) के रूप में सूचीबद्ध हैं।**
  - **संरक्षण की स्थिति:**
    - ये भारतीय वन्यजीव संरक्षण अधिनियम, 1972 की अनुसूची I में सूचीबद्ध हैं।
    - साथ ही, ये **वन्य जीवों एवं वनस्पतियों की लुप्तप्राय प्रजातियों के अंतर्राष्ट्रीय व्यापार पर कन्वेंशन (CITES) के एपेंडिक्स I** में भी सूचीबद्ध हैं।
- **इसके संरक्षण के लिए सरकार द्वारा उठाए गए मुख्य कदम:**
  - वन्यजीव अपराध नियंत्रण ब्यूरो (Wildlife Crime Control Bureau) द्वारा **ऑपरेशन सेव कूर्म** आरंभ किया गया है।
  - ओडिशा सरकार ने बड़े–बड़े जालों के लिए **टर्टल एक्सक्लूडर डिवाइस (TEDs)** का उपयोग अनिवार्य कर दिया है।
  - **ऑपरेशन ओलिवा अभ्यास** शुरू किया गया है। इसका उद्देश्य ब्रीडिंग करने वाले ओलिव रिडले कछुओं के लिए समुद्र में सुरक्षित पड़ाव सुनिश्चित करना है।

APEDA ने जैविक उत्पादों पर यूरोपीय संघ (EU) के संशोधित विनियमों को लेकर, भारतीय निर्यातकों के लिए एक वेबिनार आयोजित किया

- EU, भारतीय जैविक खाद्य उत्पादों (ऑर्गेनिक फूड प्रोडक्ट्स) के लिए दूसरा प्रमुख निर्यात गंतव्य है। **EU में भारत से निर्यात किए जाने वाले कुल जैविक खाद्य उत्पादों का लगभग 34 प्रतिशत निर्यात किया जाता है।**
  - **मध्य प्रदेश जैविक उत्पादों का सबसे बड़ा उत्पादक राज्य है।** इसके बाद महाराष्ट्र और कर्नाटक का स्थान है।
  - **जैविक उत्पादों में सबसे बड़ा हिस्सा तिलहन का है।** इसके बाद रेशेदार फसलों, सुगर क्रॉप्स, अनाज और मोटे–अनाज आदि का हिस्सा है।
- **जैविक खाद्य उत्पादों का सर्टिफिकेशन:**
  - **ऑर्गेनिक सर्टिफिकेशन:** यह जैविक खाद्य के **उत्पादकों** के लिए सर्टिफिकेशन की एक प्रक्रिया है। इसमें आम तौर पर खाद्य पदार्थों को उगाने से लेकर **भंडारण, प्रसंस्करण, पैकेजिंग और शिपिंग हेतु उत्पादन संबंधी मानकों को निर्धारित किया जाता है।**
  - **भारत में ऑर्गेनिक सर्टिफिकेशन से संबंधित दो योजनाएं हैं:**
    - **निर्यात के लिए राष्ट्रीय जैविक उत्पादन कार्यक्रम (National Programme on Organic Production: NPOP):** इसे वर्ष 2020 में आरंभ किया गया था। यह एक तरह का थर्ड पार्टी सर्टिफिकेशन है। इसके तहत मान्यता प्राप्त जैविक सर्टिफिकेशन एजेंसी द्वारा राष्ट्रीय/अंतर्राष्ट्रीय मानकों के अनुसार खेत या कृषि उत्पाद के प्रसंस्करण को प्रमाणित किया जाता है।
      - **'एपीडा' (वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय** के तहत कार्यरत) द्वारा सर्टिफिकेशन का संचालन किया जाता है। **एपीडा (APEDA) का पूरा नाम है**– कृषि तथा प्रसंस्कृत खाद्य उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण (Agricultural and Processed Food Products Export Development Authority)।
    - **पार्टिसिपेटरी गारंटी स्कीम फॉर इंडिया (PSG–इंडिया):** इसके तहत उत्पादकों द्वारा एक–दूसरे की उत्पादन पद्धतियों का आकलन, निरीक्षण और सत्यापन किया जाता है। इसका संचालन **कृषि मंत्रालय** के तहत **राष्ट्रीय जैविक खेती केंद्र** के माध्यम से किया जाता है।

भारत में जैविक खेती को बढ़ावा देने के लिए योजनाएं:
- **परंपरागत कृषि विकास योजना (PKVY);**
- **पूर्वोत्तर क्षेत्र के लिए मिशन जैविक मूल्य श्रृंखला विकास (Mission Organic Value Chain Development for North Eastern Region: MOVCDNER);** आदि।

असम और मेघालय ने आपसी सीमा विवाद को सुलझाने के लिए समझौता किया

- हाल ही में, असम और मेघालय ने एक समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं। **इस समझौते के तहत दोनों राज्यों ने अपने पांच दशक पुराने अंतर्राज्यीय सीमा विवाद से संबंधित अधिकतर विवादों को सुलझा लिया है।**
- **इस समझौते के मुख्य बिंदुओं पर एक नज़र:**
  - असम और मेघालय के बीच **12 क्षेत्रों को लेकर विवाद** मौजूद था। इस समझौते के तहत 12 में से **6 क्षेत्रों से संबंधित विवाद को सुलझा लिया गया है।** इस प्रकार, दोनों राज्यों के बीच **लगभग 70 प्रतिशत सीमा विवादमुक्त हो गई है।**
    - असम और मेघालय की **साझा सीमा 885 किलोमीटर** लंबी है।
  - इसके बाद अब **भारतीय सर्वेक्षण विभाग** द्वारा इन क्षेत्रों का **नक्शा तैयार करने और सीमांकन (demarcation) करने** के लिए एक सर्वेक्षण (survey) किया जाएगा। इस सर्वेक्षण के नतीजों को **मंजूरी के लिए संसद के पटल पर रखा जाएगा।**
- वर्ष 2021 में, दोनों राज्यों ने **आपसी सीमा विवाद को हल करने की प्रक्रिया शुरू करने हेतु "गिव–एंड–टेक" (या आदान–प्रदान) की नीति** अपनाई थी। इसके लिए **आपस में सहमत पांच सिद्धांतों पर आधारित** तीन क्षेत्रीय समितियों का गठन किया गया। **ये पांच सिद्धांत निम्नलिखित हैं:**
  - ऐतिहासिक वास्तविकता,
  - स्थानीय आबादी की नृजातीयता,
  - सीमा के साथ नजदीकी,
  - लोगों की इच्छा, और
  - प्रशासनिक सुविधा।
- **असम–मेघालय सीमा विवाद के इतिहास पर एक नज़र:**
  - असम–मेघालय सीमा विवाद का इतिहास काफी पुराना है। इसकी **जड़ें वर्ष 1972 में असम से अलग करके मेघालय के गठन** हेतु किए गए समझौते से जुड़ी हुई हैं। इस समझौते के तहत दोनों राज्य, **सीमाओं के सीमांकन की व्याख्या अपनी तरह से करते आए** हैं, जो सीमा–विवाद का मुख्य कारण रहा है।

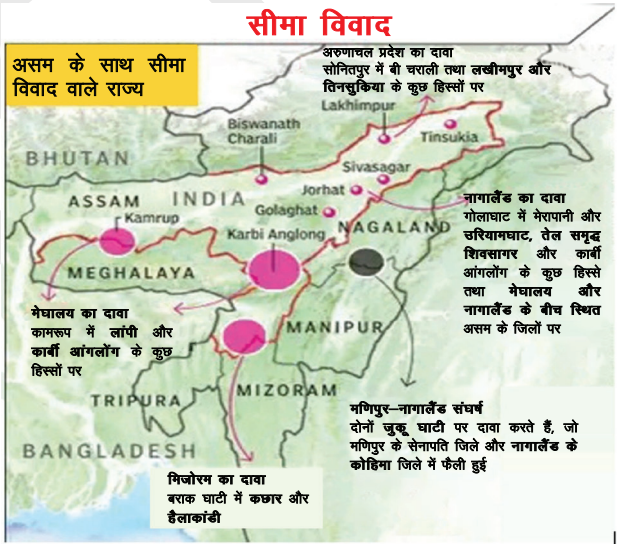

  - मेघालय के अलावा, पूर्वोत्तर के बाकी राज्यों के बीच भी कुछ न कुछ सीमा विवाद मौजूद है। इनमें से **अधिकांश राज्यों को असम से काट कर बनाया गया है, जैसे कि नागालैंड (1963), अरुणाचल प्रदेश (1987) और मिजोरम (1987)।**
  - अंग्रेजों द्वारा **त्रिपुरा और मणिपुर** रियासत को असम प्रांत में नहीं मिलाया गया था। इसलिए, इन दोनों राज्यों का असम के साथ कोई सीमा विवाद नहीं है।

ग्रामीण विकास मंत्रालय द्वारा मनरेगा की मजदूरी दरों में संशोधन किया गया

- वित्त वर्ष 2022–23 हेतु **मनरेगा** के लिए **मजदूरी दरें 1 अप्रैल से लागू** होंगी। ये दरें **महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम, 2005 की धारा 6 के तहत** तय की जाती हैं।
  - मनरेगा के लिए मजदूरी दरों को **कृषि श्रमिकों के लिए उपभोक्ता मूल्य सूचकांक** (Consumer Price Index – Agriculture Labour: CPI-AL) में बदलाव के अनुसार संशोधित किया गया है। CPI–AL, ग्रामीण मुद्रास्फीति में वृद्धि को दर्शाता है।
- **मनरेगा मजदूरी में हालिया वृद्धि पर एक नज़र:**
  - कुल मिलाकर, वित्त वर्ष 2022–23 के लिए **मनरेगा मजदूरी** को 31 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में **4 रुपये से 21 रुपये प्रति घंटे** तक बढ़ा दिया गया है।
  - तीन राज्यों में मनरेगा मजदूरी दरों में **कोई बदलाव नहीं** किया गया है। इन राज्यों में शामिल हैं– मणिपुर, मिजोरम और त्रिपुरा।
- **मनरेगा के बारे में:**
  - यह एक वित्तीय वर्ष में **100 कार्य दिवसों** हेतु रोजगार की गारंटी देता है। इसके तहत **अकुशल शारीरिक कार्य** करने के इच्छुक **ग्रामीण परिवार के वयस्क सदस्यों** को रोजगार दिया जाता है। साथ ही, **सूखा/प्राकृतिक आपदा के रूप में अधिसूचित ग्रामीण क्षेत्रों** में कार्य दिवसों को बढ़ाकर **150 दिन** किया जा सकता है।
- **मनरेगा का महत्व:**
  - इसके तहत टिकाऊ संपत्तियों का निर्माण किया जाता है, जल सुरक्षा को बेहतर बनाया जाता है, मृदा संरक्षण और जमीन से बेहतर उपज पर विशेष जोर दिया जाता है। इस प्रकार, यह योजना **गरीबों को आजीविका की सुरक्षा** प्रदान करती है।
  - मनरेगा मजदूरी से घरेलू आय में वृद्धि होती है, जिससे **परिवारों के जीवन स्तर पर सकारात्मक प्रभाव** पड़ता है।
  - यह ग्रामीण भारत में **समावेशी विकास के लिए एक प्रभावशाली साधन है।** यह ग्रामीण भारत में सामाजिक सुरक्षा, आजीविका की सुरक्षा और लोकतांत्रिक सशक्तीकरण सुनिश्चित करता है।

इंटरनेशनल रिन्यूएबल एनर्जी एजेंसी (IRENA) के अनुसार, वैश्विक ऊर्जा और जलवायु संकट से निपटने के लिए "एनर्जी ट्रांजिशन" बेहद जरूरी है

- हाल ही में, बर्लिन एनर्जी ट्रांजिशन डायलॉग के दौरान IRENA द्वारा **वर्ल्ड एनर्जी ट्रांजिशन आउटलुक–2022** जारी किया गया।
  - वर्ल्ड एनर्जी ट्रांजिशन आउटलुक–2022 में, उपलब्ध प्रौद्योगिकियों के आधार पर **प्राथमिकता वाले क्षेत्रों और कार्रवाइयों** को निर्धारित किया गया है। इसमें यह उल्लेख किया गया है कि यदि इस सदी के मध्य तक **"निवल शून्य उत्सर्जन" का लक्ष्य हासिल** करना है तो इन प्राथमिकताओं और कार्रवाइयों वर्ष 2030 तक साकार करना होगा।
- इस सदी के मध्य तक **जीवाश्म ईंधन आधारित वैश्विक ऊर्जा क्षेत्रक को शून्य–कार्बन वाले ऊर्जा क्षेत्रक** में रूपांतरित करने का सबसे उपयुक्त उपाय **एनर्जी ट्रांजिशन** है।
  - इसके तहत मुख्य रूप से **ऊर्जा से संबंधित CO_2 उत्सर्जन को कम करने** की आवश्यकता पर बल दिया जाता है, ताकि **जलवायु परिवर्तन को सीमित किया जा सके।**
- **इस दिशा में भारत सरकार द्वारा उठाए गए कदम:**
  - **हरित ऊर्जा गलियारा** के तहत अंतरराज्यीय ट्रांसमिशन प्रणाली आरंभ की गई है।
  - **प्रधान मंत्री किसान ऊर्जा सुरक्षा और उत्थान महाभियान यानी पी.एम.–कुसुम योजना** आरंभ की गई है। इसका उद्देश्य कृषि क्षेत्र में डीजल से चलने वाले पंपों की बजाए सौर ऊर्जा वाले पंपों को बढ़वा देना है।
  - अपतटीय पवन ऊर्जा (Offshore Wind Energy) की क्षमता का उपयोग करने के लिए वर्ष 2015 में **अपतटीय पवन ऊर्जा नीति** की घोषणा की गई थी।
  - **इंडियन रिन्यूएबल एनर्जी डेवलपमेंट एजेंसी (IREDA)** में 1,500 करोड़ रुपये के निवेश को मंजूरी दी गई है। यह एजेंसी अक्षय ऊर्जा (रिन्यूएबल एनर्जी) क्षेत्र से संबंधित परियोजना को वित्तपोषण प्रदान करती है।
  - **फेम इंडिया (FAME INDIA) योजना शुरू** की गई है। फेम–इंडिया का आशय है– भारत में हाइब्रिड और इलेक्ट्रिक वाहनों को तेजी से अपनाना और विनिर्माण (Faster Adoption and Manufacturing of Hybrid – Electric Vehicles in India)।
  - इसके अलावा, **राष्ट्रीय सौर मिशन,** राष्ट्रीय जैव ईंधन नीति, किफायती एल.ई.डी. के लिए उजाला योजना आदि पहलों को भी आरंभ किया गया है ।

अन्य सुर्खियाँ

प्रधान मंत्री आवास योजना–ग्रामीण (Pradhan Mantri Awas Yojana (PMAY)–Gramin)

- हाल ही में, प्रधान मंत्री ने **"PMAY–ग्रामीण"** के लाभार्थियों के लिए **5.21 लाख घरों** का उद्घाटन किया है।
- **"प्रधान मंत्री आवास योजना–ग्रामीण" के बारे में:**
  - इसे वर्ष 2016 में शुरू किया गया था।
  - **उद्देश्य:** इसका उद्देश्य बुनियादी सुविधाओं से युक्त **2.95 करोड़ पक्के मकानों का निर्माण कर,** पात्र ग्रामीण परिवारों को आवास सहायता प्रदान करना है।
  - लाभार्थियों का चयन, **सामाजिक आर्थिक और जातिगत जनगणना (SECC), 2011** का उपयोग करके किया जाता है, जिसे ग्राम सभाओं द्वारा सत्यापित किया जाता है।
  - **लागत** को केंद्र और राज्य सरकारों के बीच **मैदानी क्षेत्रों में 60:40 के अनुपात में तथा पूर्वोत्तर और हिमालयी राज्यों के लिए 90:10 के अनुपात** में साझा किया जाता है।

मुल्लापेरियार बांध (Mullaperiyar Dam)

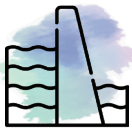

- तमिलनाडु और केरल ने **मुल्लापेरियार डैम सुपरवाइजरी** कमिटी के गठन, शक्ति और कार्यों के विस्तार के लिए सुप्रीम कोर्ट के प्रस्ताव पर चर्चा करने के लिए और समय मांगा है।
- केरल में स्थित, **126 वर्ष पुराने इस बांध का स्वामित्व तमिलनाडु के पास है। इसका संचालन (ऑपरेट) और रखरखाव भी तमिलनाडु द्वारा किया जाता है।** तमिलनाडु अपने कम–से–कम पांच जिलों की पेयजल और सिंचाई आवश्यकताओं की पूर्ति इसी बांध से करता है।
  - यह **पेरियार नदी के ऊपरी भाग में स्थित है।** यह नदी तमिलनाडु में पश्चिमी घाट की शिवगिरी की पहाड़ियों से निकलने के बाद केरल से होकर बहती है।
- इस बाँध का जलाशय पेरियार टाइगर रिजर्व के भीतर स्थित है।

कैच द रेन अभियान (Catch the rain campaign)

- भारत के राष्ट्रपति ने नई दिल्ली में **कैच द रेन अभियान, 2022 नामक जल शक्ति अभियान** का शुभारंभ किया है।
- **कैच द रेन अभियान के बारे में:**
  - **उद्देश्य:** इसका उद्देश्य राज्यों और हितधारकों को **रेन वाटर हार्वेस्टिंग स्ट्रक्चर्स (RWHS)** निर्मित करने के लिए प्रेरित करना है। RWHS का निर्माण इस तरह से किया जाना है कि वे मानसून से पहले की जलवायु परिस्थितियों और उप–मृदा स्तर के लिए उपयुक्त हों।
- **गतिविधियां:**
  - **जल संचयन गड्ढे (water harvesting pits),** छत पर RWHS आदि के निर्माण के लिए अभियान संचालित करना;
  - **जलाशयों / तालाबों के समीप अतिक्रमण को हटाना** और जल भंडारण क्षमता बढ़ाने के लिए उनमें से गाद निकालना;
  - जलग्रहण क्षेत्रों (catchment areas) में पानी लाने वाली नहरों में मौजूद अवरोधों को दूर करना; आदि।

लक्ष्य जीरो डंप–साइट (Lakshya Zero Dumpsite)

- लक्ष्य जीरो डंप–साइट के तहत, भारत सरकार ने तेलंगाना के **178.6 करोड़ रुपये के "लिगेसी वेस्ट रेमेडिएशन" (पुराने हो चुके कचरे या अपशिष्ट का उपचार)** प्रस्ताव को स्वीकृति प्रदान की है।
- **लक्ष्य जीरो डंप–साइट के बारे में:**
  - यह **स्वच्छ भारत मिशन–शहरी 2.0** के तहत एक लक्ष्य है।
  - इसके तहत लगभग **16 करोड़ मीट्रिक टन (MT)** पुराने कचरे के उपचार का लक्ष्य रखा गया है। ये कचरे देश भर में लगभग **15,000 एकड़ भूमि** में फैले हुए हैं।
  - यह **संसाधन पुनः प्राप्ति** के दृष्टिकोण और **चक्रीय अर्थव्यवस्था** के सिद्धांतों को प्रोत्साहित करने में सहायक होगा।

 प्रेसिडेंट कलर (President's Colour)	❍ यह शांति और युद्ध काल दोनों के दौरान की गई राष्ट्र की असाधारण सेवा के सम्मान में एक सैन्य इकाई को दिया जाने वाला सर्वोच्च सम्मान है। ➢ भारतीय नौसेना पहली भारतीय सशस्त्र सेना थी, जिसे 27 मई 1951 को डॉ. राजेंद्र प्रसाद द्वारा "प्रेसिडेंट कलर" अवार्ड से सम्मानित किया गया था। ➢ हाल ही में, INS वलसुरा को इससे सम्मानित किया गया है।
 इंडियन नेवल एयर स्क्वाड्रन 316 {Indian Naval Air Squadron (INAS) 316}	❍ यह **भारतीय नौसेना का दूसरा P–8I (पी–8आई) एयरक्राफ्ट स्क्वाड्रन है।** इसे गोवा के दबोलिम में मौजूद **INS हंसा** में शामिल किया गया है। ➢ INAS 316 को **'कोंडोर्स'** नाम दिया गया है। ये विशाल पंख वाले तथा उड़ने वाले सबसे बड़े स्थलीय पक्षियों में से एक हैं। ➢ यह बोइंग P–8I का संचालन करेगा। यह एक बहु–भूमिका और लंबी दूरी वाला समुद्री टोही **एंटी–सबमरीन वारफेयर (LRMR ASW)** एयरक्राफ्ट है।
 यूनेस्को 'सिटी ऑफ लिटरेचर' (UNESCO's City of Literature)	❍ हाल ही में, केरल इंस्टीट्यूट ऑफ लोकल एडमिनिस्ट्रेशन (KILA) द्वारा **कोझिकोड को यूनेस्को "सिटी ऑफ लिटरेचर"** के रूप में घोषित करने का प्रस्ताव दिया गया। यूनेस्को का सिटी ऑफ लिटरेचर प्रोग्राम **"यूनेस्को क्रिएटिव सिटीज नेटवर्क (UCCN)" का हिस्सा** है। ❍ UCCN का गठन वर्ष 2004 में किया गया था। इसे उन शहरों के साथ और उनके बीच सहयोग को बढ़ावा देने के उद्देश्य से बनाया गया था, **जिन्होंने रचनात्मकता (क्रिएटिविटी) को सतत शहरी विकास के लिए एक स्ट्रेटजिक फैक्टर के रूप में पहचाना है।** ➢ **इसमें सात रचनात्मक क्षेत्र शामिल हैं:** शिल्प और लोक कला, डिजाइन, फिल्म, पाककला (गैस्ट्रोनॉमी), साहित्य, संगीत और मीडिया कला। ❍ **इस सूची में 6 भारतीय शहर शामिल हैं**– हैदराबाद (खगोल विज्ञान), मुंबई (फिल्म), वाराणसी (संगीत), चेन्नई (संगीत), जयपुर (शिल्प और लोक कला) तथा श्रीनगर (शिल्प और लोक कला)। इसमें श्रीनगर को हाल ही में शामिल किया गया था।
 शाही लीची (Shahi Lichi)	❍ बिहार के शाही लीची को वर्ष 2018 में GI टैग प्राप्त हुआ था। ➢ बिहार के **मुजफ्फरपुर, वैशाली, समस्तीपुर, पूर्वी एवं पश्चिमी चंपारण, बेगूसराय जिलों** और आसपास के क्षेत्रों में शाही लीची के उत्पादन के लिए अनुकूल जलवायु है। ❍ **लीची के बारे में:** ➢ लीची के बीज का ऊपरी सफ़ेद, स्वच्छ, सुगंधित आवरण या खाने योग्य भाग भारत में एक टेबलफ्रूट के रूप में लोकप्रिय है। चीन और जापान में इसे सूखे या डिब्बाबंद रूप में पसंद किया जाता है। ➢ चीन के बाद **भारत, विश्व में लीची का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक** है।

8468022022, 9019066066
www.visionias.in
/c/VisionIASdelhi /Vision_IAS /visionias_upsc /VisionIAS_UPSC
दिल्ली लखनऊ जयपुर हैदराबाद पुणे अहमदाबाद चड़ीगढ गुवाहटी